

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.टी.)

सत्रीय कार्य
2020

(जनवरी 2020 और जुलाई 2020 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)



अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

**अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
पाठ्यक्रम 01 से 04 (पी.जी.डी.टी.-01 से 04)
सत्रीय कार्य 2020**

**(जनवरी 2020 और जुलाई 2020 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)**

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ-साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। इसके लिए चार पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग-अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं :

पाठ्यक्रम	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2020 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2020 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
पी.जी.डी.टी.-01 अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि	30.09.2020	31.03.2021
पी.जी.डी.टी.-02 अनुवाद का भाषिक और सामाजिक पक्ष	30.09.2020	31.03.2021
पी.जी.डी.टी.-03 व्यावहारिक अनुवाद के विविध स्तर और क्षेत्र	30.09.2020	31.03.2021
पी.जी.डी.टी.-04 प्रशासनिक अनुवाद	30.09.2020	31.03.2021

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि, अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, उसकी प्रक्रिया तथा बारीकियों की जानकारी देते हुए, विविध क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

- 1) उत्तर के लिए फूलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।
- 2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर-पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके चार सत्रीय कार्यों के लिए चार उत्तरपुस्तिकाएँ होनी चाहिए।
- 3) अपनी उत्तर-पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।
- 4) अपनी उत्तर-पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बायें कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : नामांकन संख्या :
नाम :
पता :
पाठ्यक्रम कोड :
पाठ्यक्रम का शीर्षक :
सत्रीय कार्य कोड : हस्ताक्षर :
अध्ययन केंद्र का नाम : तिथि :

- 5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहां से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
- 6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 सेमी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएंगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में, और लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 200–250 शब्दों में देने हैं। व्यावहारिक अनुवाद संबंधी प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक है, तब उन्हें साफ-साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय "कोश" का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। हिंदी और अंग्रेजी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की-सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन-क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

- क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों,
- ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हों,
- ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुरूप हों,
- घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों, और
- ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।
- च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

- छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।
- ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग-अलग लिखें।
- झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।
- ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**
- ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।
- ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

पी.जी.डी.टी-01
अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी-01

सत्रीय कार्य कोड : पीजीडीटी-1/एएसटी-01(टीएमए)/2020

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए : 10X6 = 60
- अनुवाद का अर्थ बताते हुए उसके स्वरूप की विस्तार से चर्चा कीजिए।
 - अनुवाद की भारतीय परंपरा की विस्तार से चर्चा कीजिए।
 - 'राष्ट्रीय एकता में अनुवाद का विशेष महत्व है।' उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।
 - 'व्यतिरेकी विश्लेषण और अनुवाद' पर एक विस्तृत टिप्पणी लिखिए।
 - सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में बरती जानी वाली सावधानियों का विवेचन कीजिए।
 - अननुवाद्यता की अवधारणा स्पष्ट करते हुए इसके विविध आयामों की सोदाहरण चर्चा कीजिए।
 - मशीनी अनुवाद की प्रमुख प्रविधियों का सोदाहरण वर्णन कीजिए।
 - अनुवाद के मूल्यांकन की विभिन्न पद्धतियों की चर्चा कीजिए।
 - पुनरीक्षण से क्या अभिप्राय है? अनुवाद में इसका क्या महत्व है? स्पष्ट कीजिए।
 - एक अच्छे अनुवादक से किन-किन गुणों की अपेक्षा की जाती है? विस्तार से चर्चा कीजिए।
2. निम्नलिखित शब्दों को कोश के क्रम में लिखिए : 5X2 =10
- क. साहित्य, संरचना, स्रोत, सुधा, शिक्षा, संगम, सुशासन, संचालन, सीवान, संस्कृति, संकल्पना, शब्दावली, संशोधन, स्त्री, शुचिता
- ख. Himalaya, hitch, harassment, humming, hindrance, hollow, history, handling, heaven, handsome, habitat, hail, haggard
3. कम से कम पाँच महत्वपूर्ण शब्दकोशों और थिसॉरस के नाम बताइए। 5
4. निम्नलिखित का रोमन/देवनागरी में लिप्यंतरण कीजिए। 5
- | | |
|-----------|-----------|
| क्षेत्र | Bizzare |
| तटस्थ | haphazard |
| रूपांतरण | niche |
| विशेषज्ञ | pretend |
| उपेक्षिता | situation |
5. निम्नलिखित हिंदी मुहावरों/लोकोक्तियों के अंग्रेजी समतुल्य लिखिए : 5
- नाक पर मक्खी न बैठने देना
 - आसमान सिर पर उठा लेना
 - आग बबूला होना
 - पानी में रहकर मगर से बैर
 - नाच न जाने आँगन टेढ़ा

6. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के हिंदी रूप लिखिए :

5

- i) A penny saved is a penny earned
- ii) Better late than never
- iii) No pain, no gain
- iv) Birds of a feather flock together
- v) Don't cry over split milk

7. नीचे दिए गए अंग्रेजी पाठ और उसके हिंदी अनुवाद को ध्यान से पढ़िए और अनूदित पाठ का पुनरीक्षण कीजिए :

10

मूल पाठ :

Rajasthan is located on the western side of the country widely covered with Thar Desert (also known as the Rajasthan Desert and Great Indian Desert) in the western parts and Aravali hill ranges in its eastern and northern parts. Rajasthan shares its border with Punjab in the north; Haryana and Uttar Pradesh in the north-east; Madhya Pradesh in the south-east; and Gujarat in the south-west and the Pakistani Provinces of Punjab in the north-west and Sindh in the west, along the Sutlej-Indus river valley. The culturally rich state has a history which goes back to the Indus valley civilization sites at Kalibanga, medieval Dilwara Temples, Mount Abu and temples of Osian, forts and miniature painting traditions, colorful handicrafts and the keoladeo National Park, Bharatpur, a World Heritage site, two of the national tiger reserves at Ranthambore in Sawai Madhopur and Sariska Tiger reserves in Alwar. The state was formed on 30 March 1949, when the numerous princely states were merged into India and Jaipur, also known as Pink City, was made its capital. The state is fed by the rivers Chambal, Ghaggar, Luni, Banas etc., and several lakes developed by various kings. The more recent intervention of Indira Gandhi Canal built for irrigation and the step wells and dams are other sources of water in Rajasthan.

हिंदी अनुवाद :

भारत के पश्चिमी हिस्से में स्थित राजस्थान का पश्चिमी हिस्सा में थार रेगिस्तान (जिसे राजस्थान का रेगिस्तान और महान भारतीय राजस्थान के नाम से भी जाना जाता है) है तथा पूर्वी और उत्तरी हिस्से में अरावली की पहाड़ियाँ हैं और उत्तर में राजस्थान की सीमा पंजाब से, उत्तर-पूर्व में हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश से, दक्षिण-पूर्व में मध्य प्रदेश से, दक्षिण-पश्चिम में गुजरात से लगती है। इसकी सीमा उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान के पंजाब से और पश्चिम में सतलुज-सिंध नदी के साथ सिंध से लगती है। सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न इस राज्य का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता तक पहुँचता है जिसमें कालीबंगा में सिंधु घाटी सभ्यता दृश्य मध्यकालीन दिलवाड़ा के मंदिर, माउंट आबू और ओशियन के मंदिर, किले एवं लघु चित्र परंपरा, रंग-बिरंगा हस्तशिल्प और भरतपुर का केउलादेव राष्ट्रीय उद्यान, जो एक विश्व धरोहर सथल है, सवाई माघोपुरा के रणथंबोर में स्थित दो राष्ट्रीय बाघ अभ्यारण्य और अलवर में स्थित सरिस्का बाघ अभ्यारण्य इसके दर्शनीय स्थल हैं। इस राज्य का गठन हुआ 30 मार्च से जब कई रियासतों का भारत में मिलाया और जयपुर गुलाबी रंग का शहर के नाम से जाने जाने वाले को राजस्थान की राजधानी बनाया गया था। चंबल, घग्घर, लूनी आदि नदियों तथा विभिन्न राजाओं द्वारा बनवाई गई झीलों से इस राज्य को पानी भेजा जाता है। कुछ वर्षों पीछे खेतों की सिंचाई के लिए इंदिरा गांधी झील, कुँ तथा बाँध इस राज्य का पानी देने का कर्म करते रहते हैं।

पी.जी.डी.टी-02
अनुवाद का भाषिक और सामाजिक पक्ष
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी-02
सत्रीय कार्य कोड:पीजीडीटी-02/एएसटी-01(टीएमए)/2020

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए। 8x8=64
 - i) 'भाषा संरचना और अनुवाद' पर एक निबंध लिखिए।
 - ii) पारिभाषिक शब्दावली संबंधी विभिन्न विचारधाराओं और इनके निर्माण की प्रक्रिया की सोदाहरण चर्चा कीजिए।
 - iii) बहुभाषिक समाज में अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
 - iv) अनुवाद के विभिन्न माध्यमों से भाषा विकास के विभिन्न पक्षों का विवेचन कीजिए।
 - v) 'तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन और अनुवाद' पर एक विस्तृत टिप्पणी लिखिए।
 - vi) शिक्षा और अनुवाद का संबंध स्पष्ट कीजिए और पाठ्य-सामग्री निर्माण में अनुवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
 - vii) मूल्यांकन सामग्री के अनुवाद की सामान्य भूलों और उनके सुधार के तरीकों का वर्णन कीजिए।
 - viii) प्रशासनिक कार्यों में अनुवाद की आवश्यकता और अनुवाद संबंधी व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।
2. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी पर्याय लिखिए: 5
 - (1) अग्रिम अदायगी, (2) मृत्युदंड, (3) प्रतिनियुक्ति भत्ता, (4) अनुमानित लागत, (5) औद्योगिक संबंध, (6) प्रबंधन तकनीक, (7) राष्ट्रीय अखंडता, (8) गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम, (9) स्व-रोजगार, (10) स्वागत भाषण
3. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए: 5
 - (1) commemorative lecture, (2) divided responsibility, (3) financial performance, (4) house building advance, (5) local distribution, (6) net amount, (7) part-time employment, (8) railway freight, (9) salary deductions, (10) transfer on deputation
6. निम्नलिखित प्रश्न पत्र का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 8

SOCIAL WORK

Tutor Marked Assignment (TMA)

Note: All questions are compulsory.

Section A

Answer the following question in 1000 words each.

15X3=45 marks

1. Trace the historical development of social work education in India.
2. Discuss the contribution made by Dr. B.R. Ambedkar for the empowerment of weaker section of the society.
3. Discuss the process of policy formulation with examples.

Section B

Answer the following question in 400 words each.

7X5=35 marks

4. Briefly explain the contribution of NGOs towards welfare of differently able in India.
5. Highlight the philosophical base of 'Satyagrah'.
6. Enumerate the objectives of Tribal development.
7. Enlist the tasks of Gandhi Peace Foundation.
8. Highlight the linkage between Sikhism and Social Work.

Section C

Write short notes on the following in about 100 words each.

4X5=20 marks

9. Peasant movement in India
10. Community Development Projects
11. Objectives of National Institute of Rehabilitation
13. Indigenous literature in Social Work
14. Government initiatives in post-independence era in Rural Development

7. निम्नलिखित सामग्री का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

9

The Sustainability Science is a new emerging discipline not only in India, but also at global level. The concept of the Sustainability Science has been well articulated and acknowledged in the definition given by Brundtland Commission, "The development to meet the needs of the present generation without compromising the ability of future generations to meet their own needs". It focuses on two components – the needs of the present; and the future generation. The basic needs are food and shelter for everyone, and the same are provided by nature. So, everyone in this generation and the generations to come needs to have basic food and amenities. We should have a model of progress where proper food and livelihood security opportunities exist for the present and future generations. The nature plays an important role in providing food and livelihood security and this puts the onus on all of us to conserve nature. And this is a fact also that human beings and nature are distinct but inseparable.

Thus, sustainability science is the discipline that deals with the interaction between Nature and Society. In the words of Prof. Swaminathan, 'Sustainability Science is the study of arts and science of sustainable Development. No doubt, livelihood security is the basic pillar to sustainable development. The growth of sustainable development in India can be achieved through three major approaches, i.e. research, sustainable development models; and education.

8. निम्नलिखित सामग्री का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए :

9

भारत के संविधान का निर्माण 1946 में गठित संविधान सभा ने किया था। संविधान सभा ने विभिन्न विषयों पर 17 समितियाँ गठित की थीं। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद प्रक्रिया, संचालन सहित चार समितियों के सभापति थे। इसी तरह, संघीय विधान सहित तीन समितियों के सभापति पं. जवाहरलाल नेहरू थे। सरदार वल्लभ भाई पटेल मौलिक अधिकार, अल्पसंख्यक आदि मामलों की समिति के सभापति थे। प्रारूप समिति के सभापति डॉ. बी.आर. अंबेडकर का काम विशिष्ट था। डॉ. अंबेडकर ने ही संविधान पारण (passing) का प्रस्ताव रखा था। प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ। इस प्रकार, 26 नवंबर 1949 की तिथि भारतीय गणतंत्र

के लिए ऐतिहासिक महत्व की है। गत कुछ वर्ष पूर्व यह निर्णय लिया गया कि इस दिन को 'संविधान दिवस' के रूप में मनाया जाएगा।

संविधान देश की सर्वोच्च विधि है। वह केवल निर्जीव शब्दों का संचय मात्र नहीं है। प्रत्येक संविधान का उद्देश्य और दर्शन भी होता है। इस दृष्टि से भारत का संविधान, कई अर्थों में विश्व के अन्य संविधानों से अलग है। इसकी उद्देशिका (Preamble) विशिष्ट है। उद्देशिका के अनुसार संविधान की सर्वोपरिता का मुख्य शक्ति स्रोत 'हम भारत के लोग' है। 'हम भारत के लोगों' ने संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए इस संविधान को अधिनियमित एवं अंगीकृत किया है। उद्देशिका में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, समता तथा बंधुता के राष्ट्रीय स्वप्न हैं।

संविधान निर्माताओं ने दुनिया के कई संविधानों से अनुभव लिए। आयरलैंड से राज्य के नीति निदेशक तत्वों की प्रेरणा ली। वहीं भारतीय संसदीय प्रणाली, ब्रिटिश परंपरा के अनुभव का परिणाम है। वहीं, मूल अधिकार अमेरिकी संविधान के अनुभव हैं। वैसे प्राचीन भारत में लोकतंत्र और नीति निदेशक तत्वों जैसी धारणा पहले भी थी। यह बात संविधान सभा में डॉ. अंबेडकर ने ही कही थी। अन्य देशों से अलग भारत के संविधान में प्रशासनिक उपबंध भी हैं। नीति निदेशक तत्व खूबसूरत निर्देश हैं। संविधान के अनुच्छेद 51-क में मूल कर्तव्यों का भी उल्लेख है। मूल अधिकारों का दायरा बड़ा है, वैसे ही मूल कर्तव्यों की व्यापकता भी है। राजनीतिक तंत्र में मूल अधिकारों के प्रति सजगता जरूरत से ज्यादा है। विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, लोकतंत्र का आधार है। यह हमारे संविधान का मूल रस है। वास्तविकता यह है कि संविधान को मानने और जानने में ही भारतीय लोकतंत्र का भविष्य निहित है।

पी.जी.डी.टी-03
व्यावहारिक अनुवाद के विविध स्तर और क्षेत्र
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी-03
सत्रीय कार्य कोड: पीजीडीटी-03/एएसटी-01(टीएमए)/2020
अधिकतम अंक : 100 अंक

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. आशु अनुवाद से क्या अभिप्राय है? इसके प्रमुख प्रयोग क्षेत्रों की विस्तार से चर्चा कीजिए। 20
2. निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 10
 - i) Perhaps post-structuralism is best seen in the context as a persistent questioning of taken-for-granted assumptions about translation.
 - ii) In colonial times there had existed a sharp divide between factories owned by British firms and those owned by Indians.
 - iii) They believed firmly that India had to be educated, united, outward looking and, above all, industrialized.
 - iv) To explain the rise of the software sector one must invoke factors both proximate and distant.
 - v) Time and again, Deepa Mehta has been described as transnational film-maker.
 - vi) Tom is a charismatic radio talk show host with an unconventional upbringing which results him in little too quickly to fall in love.
 - vii) Historians of the 18th century seek to interpret and understand that time, and so, following them, do their readers.
 - viii) Back in 1985, Susan Bassnett aptly described the difference between British, German and Italian acting styles.
 - ix) This is a light-hearted film that is humorous and family oriented unlike some of her other movies.
 - x) But I do want to ask questions: difficult, disturbing questions that have dogged me ever since I embarked on this journey.
3. निम्नलिखित का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 10
 1. संख्याओं के विकासक्रम में मनुष्य के विकासक्रम का बोध भी अंतर्निहित है।
 2. यूरोप ने उत्पादन की गति को और तीव्र करने के लिए साम्राज्यवादी विस्तार का सहारा लिया।
 3. ज्ञान मुक्ति की ओर नहीं, वर्चस्व और ताकत की ओर ले जाता है।
 4. वर्तमान समाज एक ऐसे मोड़ पर आ गया है जहाँ उसे सिर्फ उत्पादन या उत्पादन प्रक्रिया के माध्यम से पूरी तरह व्याख्यायित नहीं किया जा सकता।
 5. सूफियों के चारों संप्रदायों के केंद्र पंजाब और सिंध में ही पाए जाते हैं।
 6. इन कवयित्रियों पर उनके समकालीनों ने भी आलोचनात्मक टिप्पणियाँ की हैं, और इस तरह रचनात्मकता में साझेदारी की है।
 7. फूको के लेखन में समाज की न्यायिक प्रक्रिया का मूल्यांकन बेहद महत्वपूर्ण है।
 8. फूको ने बीसवीं सदी की क्रूरता को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और तकनीक के विकास से जोड़कर देखने का प्रयत्न किया।
 9. ज्ञान के स्थान पर तकनीक की भूमिका मनुष्य की चेतना पर वर्चस्व स्थापित करने लगी थी।
 10. बीसवीं सदी के मनुष्य के समक्ष विज्ञान ने आधुनिकता के माध्यम से नए संकट प्रस्तुत किए।

4. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

15x2=30

- a) In this section we will read about two themes relating to early societies. The first is about the beginnings of human existence, from the remote past, millions of years ago. You will learn how humans first emerged in Africa and how archaeologists have studied these early phases of history from remains of bones and stone tools.

Archaeologists have made attempts to reconstruct the lives of early people – to find out about the shelters in which they lived. The food they ate by gathering plant produce and hunting animals and the ways in which they expressed themselves. Other important developments include the use of fire and of language. And finally, you will see whether the lives of people who live by hunting and gathering today can help us to understand the past.

The second theme deals with some of the earliest cities – those of Mesopotamia, present-day Iraq. These cities developed around temples, and were centers of long-distance trade. Archeological evidence – remains of old settlements – and an abundance of written material are used to reconstruct the lives of the different people, who lived there – craftspeople, scribes, labourers, priests, kings and queens. You will notice how pastoral people played an important role in some of these towns. A question to think about is whether the many activities that went on in cities would have been possible if writing had not developed. You may wonder as to how people who for millions of years had lived in forests, in caves or temporary shelters began to eventually live in villages and cities. Well, the story is a long one and is related to several developments that took place at least 5,000 years before the establishment of the first cities.

One of the most far-reaching changes was the gradual shift from nomadic life to settled agriculture, which began around 10,000 years ago. As you will see in Theme 1, prior to the adoption of agriculture, people had gathered plant produce as a source of food. Slowly, they learnt more about different kinds of plants – where they grew, the seasons when they bore fruit and so on.

- b) Geographically, Arunachal Pradesh is located in the north-eastern extremity of India. It became a full-fledged state of the Republic known as the North-East Frontier Agency (NEFA). Thereafter, it became a Union Territory and renamed as Arunachal Pradesh.

The State is known for its pristine beauty, high mountainous regions, undulating terrains, enchanting scenery, formidable streams, and thick forests. Extending from the snow covered peaks of the Himalayas to the Brahmaputra Plains, Arunachal Pradesh, also known as the ‘Land of the Rising Sun’, is surrounded by Tibet and China on the north and the north-east, Bhutan on the west, Assam and Nagaland on the south, and Myanmar on the east. In fact, the Himalayan and the Patkai hills cover a major part of the state, making it the most sparsely populated in India. However, the passes running through these hills and the river courses provide essential transportation routes to the people of the State.

The main rivers of Arunachal Pradesh are Siang, Tirap, Khameng, Lohit and Subansiri, which forms the mighty Brahmaputra in Assam. These rivers, originating from the Himalayas, are snow-fed and divide the State into five river valleys.

The climate on the foothills is sub-tropical. However, in the mountains the temperature decreases with the rising altitude. The State also receives copious rainfall averaging between 2000 mm and 4000 mm (80-160 inches) in a year.

क) आज के मानव ने प्रकृति पर पूरी तरह से विजय पा ली है। यह विकास की दृष्टि से तो ठीक है, परंतु ऐसा करके मानव ने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार दी है। विज्ञान की मदद से मानव चाँद पर भी जा चुका है, किंतु जिस हिसाब से आधुनिकता के नाम पर उसने प्रकृति से छेड़छाड़ की है, उसका खामियाजा तो हमें ही भुगतना पड़ेगा। अगर समय रहते हम नहीं चेते और पर्यावरण को बचाने के बारे में नहीं सोचा तो इसके भयंकर परिणाम हो सकते हैं। पूरे सौरमंडल में केवल हमारी पृथ्वी पर ही जीवन संभव है। परंतु यदि यही हाल रहा तो कहा नहीं जा सकता कि पृथ्वी पर जीवन कब तक संभव रहेगा। ऐसी भयावह परिस्थितियों से बचने के मनुष्य को सही समय पर प्रयास करने होंगे।

आइए समझते हैं कि पर्यावरण सुरक्षा क्या है। पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – 'परि' तथा 'आवरण'। 'परि' अर्थात् चारों ओर, तथा 'आवरण' से अभिप्राय है – घेरे हुए। हमारे चारों ओर फैले आवरण को ही पर्यावरण कहते हैं। दूसरे शब्दों में मानव, वनस्पति, पशु-पक्षी सहित सभी जैविक और अजैविक घटकों के समूह को पर्यावरण कहते हैं। इसमें हवा, पानी, मिट्टी, पेड़, पहाड़, झरने, नदियाँ आदि सभी आते हैं। पर्यावरण संरक्षण को पारिस्थितिकी प्रणालियों और उनके घटक भागों में अवांछित परिवर्तनों की रोकथाम के रूप में भी परिभाषित कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि पर्यावरण संरक्षण मानव गतिविधियों से जुड़े परिवर्तनों से पारिस्थितिक तंत्र और उनके घटक भागों की सुरक्षा तथा अवांछित प्राकृतिक परिवर्तनों की रोकथाम करने का नाम है।

पर्यावरण संरक्षण व्यक्तियों, संगठनों और सरकारों द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करने का काम है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों और मौजूदा प्राकृतिक वातावरण का संरक्षण करना है और जहाँ संभव हो, क्षति और पुनर्निर्माण उपायों पर ध्यान इंगित करना है। पारिस्थितिक दृष्टिकोण से मनुष्यों को पारिस्थितिक तंत्र का एक अभिन्न अंग माना जाता है।

ख) तुलनात्मक साहित्य ससीमता की आवाज की माँग करता है, जो मनुष्य की मूर्त संस्कृति तथा प्राचीनकाल से चली आ रहा उसका धार्मिक विशिष्ट स्वरूप है। यह लुप्त हुए मौखिक एवं लिखित साहित्य के बीच संबंध की माँग करता है। यह सांस्कृतिक वैशिष्ट्य बनाए रखते हुए संवाद की माँग करता है। संवाद जारी रखने के लिए यह असमानताओं का अन्वेषण करता है तथा यह आशा रखता है कि एक संस्कृति का भाव दूसरी में पहुँचेगा। यह मानवीय ससीमता की गतिशील संरचना बनाए रखने तथा उनकी 'निरंतर बोल रही अथक आवाज' श्रव्य रखने के लिए सर्वत्र भिन्न तथा विशेष साहित्यों का सामना करता है।

अंतरपाठीय पाठ में संभवतः तुलनात्मक साहित्य तथा अस्तित्व की ससीमता समक्रमिक (synchronous) हो सकते हैं। स्वच्छंदतावादी दौर में कॉलरिज ने इस पाठ की कल्पना एक ऐसे पाठ के रूप में की, जो केवल साहित्यिक प्रभावों से परिपूर्ण नहीं परंतु उस पुनरुत्पादक बल से युक्त है जो विज्ञान एवं मानविकी 'अभिलेखागार' से निकलता है। जीवविज्ञान, अर्थशास्त्र तथा भाषाशास्त्र सभी मानवीय ससीमता से संबद्ध हैं। यह एक ऐसा तुलनात्मक रूप है, जो इन अनुशासनों को समनुरूप रखकर अपने ज्ञान की उत्पत्ति करता है। इनके अनुभवसिद्ध ज्ञान के अनुसार मनुष्य अपने इतिहास के साथ-साथ उत्कृष्टता की पारिस्थितिक सीमाओं का सामना करता है। वह अपनी जीवन शक्ति के लिए ज्ञान का सृजन करता है, जिसका संबंध 'अनुभवसिद्ध उत्कृष्टता युग्म' में शामिल दो समकालिक प्रक्रियाओं से है। यह ज्ञान विभिन्न अनुशासनों के सभी साहित्यों की श्रेष्ठताओं को ग्रहण करने के लिए उसकी प्रगतिशील पूर्णता की प्रेरणा देता है।

पी.जी.डी.टी-04
प्रशासनिक अनुवाद
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी-04
सत्रीय कार्य कोड: पीजीडीटी-04/एएसटी-01(टीएमए)/2020

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. कार्यालय की भाषा का परिचय देते हुए प्रशासनिक हिंदी-प्रयोग के विविध क्षेत्रों का सोदाहरण वर्णन कीजिए । 10
2. निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय बताइए : 10

(1) advance increment, (2) break-even point, (3) casual employee, (4) double house rent allowance, (5) education and general funds, (6) free market economy, (7) government servant conduct rules, (8) horizontal communication, (9) innovative management governance, (10) landless labourer, (11) non-contributory pension scheme, (12) out of court, (13) pension payment order, (14) remittance facilities, (15) special consultation, (16) supplementary question, (17) termination of contract, (18) unclassified categories, (19) voter eligibility, (20) work performance arrangement

3. निम्नलिखित अभिव्यक्तियों के हिंदी पर्याय बताइए : 10
 - i. as may be considered expedient
 - ii. background of the case
 - iii. candidature approved in the capacity of
 - iv. draft, as amended, may be issued
 - v. empowered to sanction
 - vi. failing which serious action will be taken
 - vii. has been dealt with suitably
 - viii. in the course of action
 - ix. no progress has been made in the matter
 - x. office copy and fair copy for signature

4. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए: 10x4=40

- a) Declaring a global climate emergency, more than 11,000 scientists from 153 countries have warned that “untold suffering” is inevitable without deep and lasting shifts in human activities that contribute to green house gas emissions and other factors related to climate change. In a paper published on Tuesday in a research journal, 11,258 signatories, including 69 from India, present trends in climate change and provide a set of effective mitigating actions.

The declaration of a climate emergency is based on scientific analysis of more than 40 years of publicly available data covering a broad range of measures, including energy use, surface temperature, population growth, deforestation, fertility rates, gross domestic product and carbon emissions. The global coalition of scientists from Oregon State University (OSU) point to six areas in which humanity should take immediate steps to slow down the effects of a warming planet. These are energy, shortlived pollutants, nature, food, economy, and population.

“The basic quest for all of us is to provide adequate food and energy supplies and sustain it. For that we are exploiting our nature to the best of our ability, which has caused tremendous damage to the nature,” one of the signatories, said. Referring to the India context, he said: “There is a tremendous change in the monsoon pattern across the country, which had triggered changes in agricultural practices”. The signatories said they are encouraged by the recent surge of concern. “Governmental bodies are making climate emergency declarations. Grassroots citizen movements are demanding change, and many countries, states and provinces, cities, and businesses are responding,” they said.

- b) The Insurance Regulatory and Development Authority of India (IRDAI) has directed insurers to show rewards and remuneration paid to agents, brokers or other intermediaries under the head ‘Commission’ in their financial statements. The objective is to ensure consistency, uniformity and fair presentation. “Rewards and/or remuneration to agents, brokers or other intermediaries shall be shown as part of head ‘Commission’ in the financial statements. Rewards shall be shown as a separate line item in Schedule 2 ‘Commission’, below Net Commission in the financial statements”, the insurance regulator decreed recently. IRDAI allows insurers to pay rewards of up to 20% of first year commissions to distributors whose revenue from non-insurance intermediary businesses does not exceed 50% of their total revenue in a year. The idea is to reward agents who primarily rely on their agency business for their livelihood, and not institutional distributors like banks.

While insurers have always been required to disclose rewards, the new rule will make it easier for policy-holders to understand the payout structure. “A lay-person might not understand the nitty gritty of financial statements and disclosures. Now, total payouts, including commissions and rewards, made to intermediaries can be seen under a single schedule”, says an Actuarial Officer. It will be simpler now to compute the percentage of payouts. Do remember, however, that IRDAI’s move will not impact your returns in any way. He said, “these are related to disclosures and will not impact the product's internal rate of return for policyholders”.

This is similar to SEBI’s rules for disclosure of remuneration paid by asset management companies to their mutual fund distributors. The market regulator's definition of commission encompasses direct monetary payments as well as payments made in the form of gifts/ rewards, trips and event sponsorships. Rewards to insurance intermediaries are covered by IRDAI compensation to intermediaries’ regulations (2018). Nature and quantum of such rewards are closely related to commissions and hence disclosing the same under the head Commission is more natural.

- c) **CENTRAL GOVT EMPLOYEES WELFARE HOUSING ORGANISATION**
(An autonomous body of GOI under the aegis of M/o Housing & Urban Affairs)
6th Floor, ‘A’ Wing Janpath Bhawan, Janpath, New Delhi - 110 001

INVITATION FOR EXPRESSION OF INTEREST (SECOND CALL)

Central Government Employees Welfare Housing Organisation (CGEWHO) intends to construct a housing project consisting of 370 (approx.) dwelling units of various types in basement + high-rise configuration at Sector 79, SAS Nagar, Mohali, Punjab.

CGEWHO invites online offers in two bid system from eligible, reputed and experienced civil work agencies (meeting Pre-qualification criteria) through CGEWHO’s e-procurement portal (www.tenderwizard.com/CGEWHO) to indicate their Expression of Interest for building works contract. To meet minimum pre-qualification criteria, the agencies should have :

- i) Minimum average annual turnover for the last 5 years - Rs. 48 crores

- ii) Generating profit throughout last five years and should not have any carry forward loss as on date.
- iii) Minimum one completed housing project of Rs. 86 crores
- iv) Minimum one housing project completed or in progress of 370 dwelling units
- v) Minimum Capital (Share Capital including loaned funds & free reserves) - Rs. 3 crores
- vi) The borrowed funds should not exceed 3 times of the capital.

Detailed scope of work, technical drawings, preambles and other bid solicitation documents will be made available only to the pre-qualified agencies on the basis of technical and financial competencies such as fields of expertise, resources, available assets, financial stability, previous experiences in similar works, litigation history etc. as sought, in the prescribed format. Interested agencies must provide the above information strictly in the format provided by this office along with documentary evidence.

Final pre-qualification shall be made out of the above evaluation and CGEWHO reserves its right to pre-qualify or disqualify any or all applications, without assigning any reason thereof. No correspondence in this regard shall be entertained. The agencies applied against earlier advertisement, need not to apply again. Last date for submission of EOI is 06.12.2019.

- d) Regular visits to museums, the theatre, concerts and art galleries may be associated with a longer life, according to a study of older adults in the UK. The finding, published in a research journal, is important given the focus on social prescribing schemes that refer people to community arts activities to improve their wellbeing, the researchers said.

Previous studies have found that engaging with the arts can improve a person's physical and mental wellbeing, including depression, dementia, and chronic pain, they said. However, whether arts engagement can improve survival remains unclear. The researchers at University College London in the UK set out to explore the association between different frequencies of arts engagement and mortality. Their findings are based on data from more than 6,000 adults in the United Kingdom aged 50 years and over who were taking part in an 'Ageing study'.

Frequency of arts activities, including going to the theatre, concerts, opera, museums, art galleries, and exhibitions, was measured at the start of the study in 2004-2005. Participants were then followed up for an average of 12 years, during which time deaths were recorded using the UK National Health Service (NHS) mortality data. After taking account of a range of economic, health and social factors, the researchers found that people who engaged in arts activities once or twice a year had a 14% lower risk of dying at any time during the follow up period than those who never engaged. People who engaged in arts activities more frequently had a 31% lower risk of dying, the study found.

This protective association was largely explained by differences in cognition thinking and understanding mental health, and physical activity levels among those who did and did not engage in the arts. However, results were maintained independent of these and other factors such as mobility problems, deprivation, wealth and retirement, the researchers said.

- 5. निम्नलिखित सामग्री का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 10X3=30

- क) क्लाउड कंप्यूटिंग की एक ऐसी शैली है जिसमें कंप्यूटिंग से संबंधित क्षमताएँ इंटरनेट के माध्यम से सेवा के रूप में उपलब्ध कराई जाती हैं। दरअसल, क्लाउड कंप्यूटिंग इंटरनेट का एक ऐसा अनुप्रयोग है जिसके द्वारा कंप्यूटरों को हल्का, सस्ता और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है और उपयोगकर्ता कभी भी, कहीं भी अपना कार्य कर सकता है। यह एक वर्चुअल डेस्कटॉप है जिसे अनेक उपयोगकर्ता एक साथ उपयोग में ला सकते हैं। अनेक लोगों का मानना है कि आने वाले

समय में क्लाउड कंप्यूटिंग, कंप्यूटिंग के क्षेत्र में क्रांति ला सकेगी। क्लाउड कंप्यूटिंग एक ऐसी प्रौद्योगिकी है जिसमें आँकड़ों और अनुप्रयोगों के रख-रखाव और उपयोग के लिए इंटरनेट तथा एक केंद्रीय सुदूर संचालित सर्वर का उपयोग किया जाता है। इसके लिए प्रत्येक कंप्यूटर प्रोग्राम को क्लाउड में विद्यमान होना चाहिए और प्रत्येक अनुप्रयोग के लिए वहाँ एक अलग सर्वर होना चाहिए। इसमें पूरी कंप्यूटर प्रणाली को नियंत्रित करने तथा पूरी कार्य प्रणाली को सुचारु रूप से चलाने के लिए एक केंद्रीय सर्वर रखा जाता है। क्लाउड प्रणाली की दक्षता, सुरक्षा और प्राइवैसी के प्रावधान भी इसी में शामिल होते हैं।

क्लाउड कंप्यूटिंग के द्वारा वे सभी कार्य किए जा सकते हैं जो आप अपने सामान्य कंप्यूटर द्वारा करते हैं और जिनकी कंप्यूटर द्वारा किए जा सकने की संभावना है। क्लाउड कंप्यूटिंग की मुख्य चिंताएँ तो सुरक्षा और निजता (प्राइवैसी) को लेकर ही होती हैं। किसी क्लाइंट का जो डाटा इसके बाहर कहीं विद्यमान है क्या गारंटी है कि उसको कोई दूसरा एक्सेस नहीं करेगा या फिर वह समय पर उसको सुरक्षित मिल ही जाएगा। शायद इस बारे में कड़े कानून और दोष-रहित व्यवस्थाएँ बनाने की आवश्यकता है। दूसरी ओर क्लाउड कंप्यूटिंग के प्रसार के साथ पूरे सूचना प्रौद्योगिकी जगत में होने वाले परिवर्तनों को लेकर चर्चाएँ हो रही हैं। उद्योग में नौकरियों के ढाँचे में व्यापक परिवर्तन होंगे और पुरानी प्रौद्योगिकियाँ अव्यावहारिक हो जाएँगी। स्वाभाविक है कि इससे नई प्रौद्योगिकियों के विकास की दिशा बदल जाएगी।

ख) रासायनिक खादों तथा कीटनाशकों पर पूरी तरह से आधारित पारंपरिक (Conventional) कृषि से खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। लेकिन, साथ ही, भूमि-क्षरण, वन विनाश, पर्यावरण प्रदूषण, भूमिगत जलस्तर में गिरावट जैसी गंभीर समस्याएँ भी पैदा हुई हैं। इन समस्याओं को देखते हुए यह महसूस किया गया कि पारंपरिक कृषि दीर्घकाल में टिकाऊ नहीं है। परिणामस्वरूप संपोषित कृषि (Sustainable agriculture) की अवधारणा का जन्म 1981 में हुआ जो कि प्राकृतिक संसाधनों तथा पर्यावरण संरक्षण पर विशेष जोर देती है।

लोगों में आम तौर से भ्रांति है कि संपोषित कृषि एवं जैविक (Organic) कृषि एक-दूसरे के पर्याय हैं। लेकिन यहाँ यह बताना आवश्यक है कि संपोषित कृषि एक विस्तृत शब्दावली है, जिसमें जैविक कृषि भी शामिल है। वास्तव में जैविक कृषि, संपोषित कृषि का ही एक रूप है, जिसमें रासायनिक खादों एवं कीटनाशकों का प्रयोग पूरी तरह से वर्जित होता है। संपोषित कृषि के मुख्यतः चार लक्ष्य हैं – (i) संसाधन संरक्षण, (ii) पर्यावरण स्वास्थ्य, (iii) आर्थिक लाभ; तथा (iv) सामाजिक एवं आर्थिक समानता।

संपोषित कृषि में प्रबंधन प्रक्रियाएँ पारंपरिक कृषि से भिन्न होती हैं। इसमें आनुवंशिक संसाधनों एवं जल संसाधनों के संरक्षण के साथ मृदा संरक्षण पर विशेष बल दिया जाता है। संपोषित कृषि में उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए एकीकृत पोषक प्रबंधन तथा कीटों के नियंत्रण के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन को व्यवहार में लाया जाता है; जबकि पारंपरिक कृषि में मृदा की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों तथा कीट नियंत्रण के लिए हानिकारक रसायनों का प्रयोग होता है।

विभिन्न फसलों की देशी किस्मों का संरक्षण आवश्यक है क्योंकि ये ज्यादा पौष्टिक होती हैं। इसके अतिरिक्त, इनमें बहुत से उपयोगी गुण भी होते हैं, जो भविष्य में संकर किस्मों के सुधार में बेहतर सिद्ध हो सकते हैं। चूँकि जैव-विविधता संरक्षण भी संपोषित कृषि का एक प्रमुख लक्ष्य होता है, इसलिए इस प्रकार की कृषि में संकर प्रजातियों के साथ-साथ देशी किस्मों की खेती पर भी विशेष जोर दिया जाता है।

जल एवं मृदा अत्यंत ही महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन हैं। पारंपरिक कृषि कार्यों के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से भूमिगत जल स्तर में गिरावट आई है। संपोषित कृषि, जल एवं मृदा संरक्षण पर विशेष ध्यान देती है। संपोषित कृषि में वर्षाजल के संचय और जलविभाजक प्रबंधन (Watershed management) पर विशेष ध्यान दिया जाता है ताकि वर्षाजल का अधिक से अधिक उपयोग कृषि कार्यों हेतु किया जा सके। इसके अलावा, टपक सिंचाई (Drip irrigation) जैसी सिंचाई विधियों के प्रयोग पर भी जोर दिया जाता है, जिसमें सिंचाई कार्यों के लिए जल का न्यूनतम इस्तेमाल होता है। इस प्रकार जल संरक्षण को बढ़ावा मिलता है।

ग) ब्लैक होल (Black Hole) अंतरिक्ष का एक ऐसा क्षेत्र होता है, जहाँ का गुरुत्वाकर्षण इतना अधिक होता है कि वहाँ से प्रकाश तक भी बाहर नहीं निकल सकता है। यह वह स्थान होता है जो कि हर किसी चीज को अपनी ओर आकर्षित करके अपने में समा लेता है। यहाँ का गुरुत्वाकर्षण इतना अधिक इसलिए होता है क्योंकि वहाँ का पदार्थ अत्यधिक संकुचित होकर बहुत ही छोटे से क्षेत्र में सिमट जाता है। दरअसल, ऐसा तब होता है, जब कोई विराट आकार वाला तारा नष्ट हो रहा हो या बिखर रहा हो। चूँकि ब्लैक होल से कोई भी प्रकाश बाहर नहीं आ सकता, इसलिए हम ब्लैक होल को देख भी नहीं सकते। जब कोई विशेष द्रव्यमान का तारा गुरुत्वीय बल के कारण अत्यधिक संकुचित होता है और उसका संपूर्ण द्रव्यमान अत्यधिक सूक्ष्म क्षेत्र में सिमट जाए तो ब्लैक होल की उत्पत्ति होती है।

माना जाता है कि अधिकतर मंदाकिनियों (galaxies) के केंद्र में ब्लैक होल होते हैं। जितनी ज्यादा बड़ी मंदाकिनी होगी, उतना ही बड़ा ब्लैक होल भी होगा। ब्लैक होल का पता विशेष प्रकार की दूरबीनों से इस बात के आधार पर लगाया जाता है कि इनके आसपास के तारे किस प्रकार व्यवहार कर रहे हैं। जब ब्लैक होल और कोई तारा एक-दूसरे के पास होते हैं तो उच्च ऊर्जा का प्रकाश उत्पन्न होता है। इसे हमारी आँखों से नहीं देखा जा सकता है। इसके लिए वैज्ञानिक उपग्रहों और दूरबीनों का उपयोग करते हैं। हाल ही में वैज्ञानिकों ने 30 करोड़ प्रकाश वर्ष दूर मौजूद अब तक के सबसे बड़े दो ब्लैक होलों का पता लगाया है जो आकार में हमारे सूर्य से 10 अरब गुना बड़े हैं। ब्रह्मांड की दूरियों में यह दूरी काफी कम मानी जाती है। इससे पहले पाया गया सबसे बड़ा ब्लैक होल सूर्य से छह अरब गुना बड़ा बताया गया था। वैज्ञानिकों ने यह भी खोज की है कि मंदाकिनियों के केंद्र पर स्थित अति विशाल ब्लैक होल तेजी से बढ़ रहे हैं।
